बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा - चतुर्थ **दिनांक -29-08-2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक - पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज अकर्मक एवं सकर्मक के बारे में अध्ययन करेंगे।

अकर्मक क्रिया

अकर्मक क्रिया का अर्थ होता है, कर्म के बिना या कर्म रहित। जिन क्रियाओं को कर्म की जरूरत नहीं पडती और क्रियाओं का फल कर्ता पर ही पड़ता है, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं।

दूसरे शब्दों में - जिन क्रियाओं का फल और व्यापर कर्ता को मिलता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे - तैरना, कूदना, सोना, उछलना, मरना, जीना, रोना, हँसता, चलता, दौड़ता, होना, खेलना, बैठना, मरना, घटना, जागना, उछलना, कूदना आदि।

उदहारण -

(i) वह चढ़ता है।
(ii) वे हंसते हैं।
(iii) नीता खा रही है।
(iv) पक्षी उड़ रहे हैं।
(v) बच्चा रो रहा है।

2. सकर्मक क्रिया

सकर्मक का अर्थ होता है, कर्म के साथ या कर्म सहित। जिस क्रिया का प्रभाव कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। अथार्त जिन शब्दों की वजह से कर्म की आवश्यकता होती है उसे सकर्मक क्रिया होती है।

सरल शब्दों में- जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया कहते है।

जैसे -

(i) वह चढाई चढ़ता है।

(ii) मैं खुशी से हँसता हूँ।

(iii) नीता खाना खा रही है।

(iv) बच्चे जोरों से रो रहे हैं।

गृहकार्य

इन क्रियाओं के सामने 'सकर्मक 'या 'अकर्मक 'लिखिए -

(क) हँसना अकर्मक

(ख) उठना ---------

(ग) डरना ----------

(घ) काटना ---------

(ङ) फाड़ना ---------

(च) कूदना ----------